

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजी०) चेन्नई

ज्योतिष प्रवीण परीक्षा : जून-2010

प्रश्न पत्र-I

समय : 3 घन्टे

कुल अंक : 50

कोई भी पाँच प्रश्न हल करें। प्रश्न 1 तथा 6 अनिवार्य हैं। दोनों भागों में से कम से कम एक-एक प्रश्न का चयन करते हुए तीन अन्य प्रश्नों के उत्तर दें। सब प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-I (साधारण ज्योतिष)

1. क्या ज्योतिष स्वतन्त्र इच्छा शक्ति के विरुद्ध हैं? ज्योतिष में कर्म का क्या योगदान है? प्रकाश डालें।

या

क्या ज्योतिष विज्ञान या कला अथवा दोनों हैं? चर्चा करें।

2. एक अच्छे ज्योतिष की मुख्य विशेषताएं क्या है?

3. निम्न का उत्तर दें :-

क. वराहमिहिर के बारे में आप क्या जानते हैं?

ख. ज्योतिष द्वारा जातक अपने लाभदायक फलों की किस प्रकार बढ़ोत्तरी कर सकता है?

ग. क्या ज्योतिष स्कन्धत्रय है अथवा स्कन्धपंच है?

4. क. निम्न पुस्तकों के लेख कौन हैं?

मानसागरी, उत्तर कालामृत, षट् पंचाषिका, फलदीपिका, जातक पारिजात

ख. छः वेदांगों के नाम लिखें।

5. दृढ़, अदृढ़ व दृढादृढ़ कर्म क्या है?

भाग-II (ज्योतिष से सम्बन्धित खगोल शास्त्र)

6. रिक्त स्थान की पूर्ति करें :-

i) एक स्थिर तारे के सापेक्ष में एक ग्रह द्वारा एक परिक्रमा करने में लगे समय को ----- कहते हैं।

ii) ----- मे कहा था कि सूर्य सौर मंडल के केन्द्र में है व ग्रह उसके चारों ओर घूम रहे हैं।

iii) दोनो भचक्रों के मिलन बिन्दु से वंसत संपात की वक्री दिशा में पिछड़ने की कोणिय दूरी को ----- कहते हैं।

iv) हेली पुच्छल तारे का पुनरावृत्ति समय ----- वर्ष है।

v) चन्द्रमा जब क्रांति वृत्त को दक्षिण से उत्तर जाते समय काटता है, तो वह बिन्दु ----- कहलाता है।

vi) ----- ने देखा था कि ग्रह सूर्य के चारों ओर अण्डाकार पथ पर परिक्रमा करते हैं।

vii) एक खगोलीय पिण्ड का दूसरे खगोलीय पिण्ड के सामने आना ----- कहलाता है।

viii) वंसत संपात के खिसकने की गति ----- प्रति वर्ष हैं।

ix) प्रकाश द्वारा एक वर्ष में तय की गई दूरी ----- किमी होती है।

- x) सूर्य ग्रहण के समय चन्द्रमा की परिधि के चारों ओर जो प्रकाशित बिन्दु दिखाई पड़ते हैं उन्हें ----- कहते हैं।
7. ऋतु परिवर्तन चित्र की मदद से विस्तार से समझाएं।
8. एक जन्मांग में सूर्य 232.46 अंश व चन्द्र 227.05 अंश पर है (जन्म तिथि - $9.12.07$)। जन्म दिवस पर सूर्योदय समय 6.43 है। इसके आधार पर निम्न का उत्तर दें :-
- क. सूर्य का नक्षत्र व पद
- ख. चन्द्र का नक्षत्र व पद
- ग. तिथि की गणना करें व उस तिथि का नाम बताएं।
- घ. कारण सहित बताएं कि क्या हम इस दिन को अमावस्या कह सकते हैं, अथवा नहीं
9. निम्न कथन असत्य हैं, कारण सहित बताएं :-
- i) एक जन्मांग में शनि कन्या राशि में स्थित है। जातक जब 2 वर्ष का हुआ तब शनि गोचार में वृश्चिक में है।
- ii) एक जातक का जन्म अमावस्या को हुआ व सूर्य एवं चन्द्र के भोगांश का अन्तर 180° है।
- iii) किसी दिन सूर्य 67° पर है व शुक्र एवं बुध 110° पर है।
- iv) राहु 209° पर है व दो माह पश्चात् वृश्चिक में पहुँच गया।
- v) जब इलाहाबाद में $5:30$ बजे हैं तब ग्रीनविच पर दोपहर के 12 बजे हैं।
10. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखें :-
- क. क्रांति वृत्त और भूचक्र
- ख. खगोलिय भोगांश व खगोलीय रेखांश
- ग. शर और विष्वाश
- छ. स्थानीय समय व भारतीय मानक समय

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजी०) चेन्नई

ज्योतिष प्रवीण परीक्षा : जून-2010

समय : 3 घन्टे

प्रश्न पत्र-II

कुल अंक : 50

कोई भी पाँच प्रश्न हल करें। प्रश्न 1 तथा 6 अनिवार्य हैं। दोनों भागों में से कम से कम एक-एक प्रश्न का चयन करते हुए तीन अन्य प्रश्नों के उत्तर दें। सब प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-I (गणित ज्योतिष)

1. हैदराबाद में 6 जून 2010 को 11:30 बजे जन्मे जातक के लिए लग्न व अन्य सभी ग्रहों के भोगांश की गणना करें।
2. षड्वर्ग क्या हैं? निम्न कुण्डली के लिए षड्वर्ग बनाए :-
लग्न-सिंह 14:36, सूर्य-सिंह 3:49, चन्द्र-सिंह 17:08
मंगल-कन्या 1:11, बुध-सिंह 28:33, गुरु-सिंह 12:10
शुक्र-सिंह 18:39, शनि-मिथुन 14:12, राहु-कर्क 4:09
केतु-मकर 4:09, दशम भाव - वृषभ 14:56
3. प्र. 2 में दिए जन्मांग के लिए भाव संधि व भाव मध्य के अंश ज्ञात करें व भाव कुण्डली बनाएं।
4. निम्न के संक्षिप्त में उत्तर दें :-
क. राशि कुण्डली व भाव कुण्डली ख. सायन व निरायन वर्ष
ग. जन्म राशि व जन्म नक्षत्र छ. लग्न व दशम भाव
5. निम्न का कारण सहित उत्तर दें।
क. मध्य रात्रि में जातक की कुण्डली में सूर्य किस भाव में होगा?
ख. एक जन्मांग में बुध मिथुन राशि में है। यह किस नक्षत्र में होना चाहिए ताकि यह वर्गोत्तम हो।
ग. एक जन्मांग में सूर्य राशि व नवांश में नीच का है। सूर्य किस नक्षत्र में है?
छ. एक जन्मांग में, चन्द्र भरणी के द्वितीय चरण में है। जन्म के समय दशानाथ व उसकी न्यूनतम व अधिकतम दशा अवधि बताएं।
ड. एक व्यक्ति को जन्म पर गुरु महादशा के 3 वर्ष प्राप्त हुए। चन्द्रमा किस नक्षत्र व पद में है?

भाग-II (फलित ज्योतिष)

6. निम्न जन्मांग के आधार पर दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें :-
लग्न - कन्या 24:47, सूर्य - मिथुन 13:16, चन्द्रमा - मीन 10:33
मंगल - कर्क 13:22, बुध (व) - मिथुन 27:40, गुरु - कन्या 20:06
शुक्र - मेष 27:40, शनि - सिंह 26:26, राहु - तुला 1:26
क. लग्न व सभी ग्रहों के नक्षत्र व पद बताएं।
ख. लग्नेश कौन सा ग्रह है? वह निचाभिलाषी है या उच्चभिलाषी?
ग. इस जन्मांग में बाधक स्थान कौन से हैं? बाधक स्थान अधिपति किस भाव में है?
घ. सूर्य द्वारा कौन से योग बन रहे हैं?
ड. चन्द्रमा द्वारा कौन से योग बन रहे हैं?
7. पंच महापुरुष योग समझाएं। क्या उपरोक्त जन्मांग में कोई पंच महापुरुष योग विद्यमान है?
8. संक्षिप्त टिप्पणी लिखें :-
क. केन्द्र स्थान ख. त्रिकोण स्थान
ग. अपचय व उपचय स्थान घ. त्रिषडायाधिपति ड. दुःस्थान
9. कन्या व तुला लग्न के लिए कारण सहित शुभ व अशुभ ग्रह बताएं।
10. क. गुरु के धनु व मकर में स्थित होने के क्या परिणाम हैं?
ख. वृषभ व सिंह लग्न के क्या फल हैं?

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजी०) चेन्नई

ज्योतिष प्रवीण परीक्षा : जून-2010

प्रश्न पत्र-III

समय : 3 घन्टे

कुल अंक : 50

कोई भी पाँच प्रश्न हल करें। प्रश्न 1 तथा 6 अनिवार्य हैं। दोनों भागों में से कम से कम एक-एक प्रश्न का चयन करते हुए तीन अन्य प्रश्नों के उत्तर दें। सब प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-I (ज्योतिष योग)

1. धन व वैवाहिक सुख के लिए किन भावों का अध्ययन किया जाता है? निम्न पत्रिका पर इन दोनों का विचार करें :-
लग्न - तुला 26:24, सूर्य - कर्क 18:59, चन्द्र - वृषभ 6:47
मंगल - सिंह 29:05, बुध - कर्क 8:30, गुरु (व) - मकर 7:34
शुक्र - मिथुन 8:10, शनि (व) - मकर 2:01, राहु - सिंह 3:59
2. राज योग क्या हैं? क्या प्रश्न 1 में दिए जन्मांग में, राज योग उपस्थित हैं? उनके क्या परिणाम हैं?
3. क. मारक स्थान कौन से हैं? प्रश्न 1 के जातक के लिए कौन से ग्रह मारक हैं?
ख. प्र. 1 के जातक के सामान्य स्वास्थ्य पर चर्चा करें।
4. वर्ग कुण्डलियां कौन सी हैं? फलादेश में उनका क्या उपयोग है?
5. निम्न का उत्तर दें।
क. उदाहरण सहित विपरीत राज योग समझाएं।
ख. उदाहरण सहित केन्द्र अधिपत्य दोष समझाएं।

भाग-II (दशा व गोचर)

6. क. प्रश्न 1 में दी कुण्डली के सभी महादशाओं व बृहस्पति महादशा में अंतर दशाओं की गणना करें।
ख. इसी जातक की बृहस्पति महादशा में सूर्य अन्तर दशा का फलादेश करें।
7. जन्मांग में चन्द्रमा से द्वादश, प्रथम व द्वितीय भाव से शनि गोचर के क्या फल मिलते हैं?
8. निम्न के उत्तर दें :-
क. गोचर में वक्री ग्रह किस प्रकार फल देते हैं?
ख. योगिनीधन्य महादशा में सभी अन्तरदशाओं के सामान्य फल बताएं।
ग. द्विग्रह गोचर सिद्धान्त क्या है? इसका क्या उपयोग है?
घ. लत्ता क्या है?
9. सामान्यतौर पर गोचर फल जन्म के चन्द्रमा के आधार पर जाने जाते हैं। इन गोचर के पारंपरिक फलों में विशेष परिस्थितियों में किस प्रकार बदलाव आते हैं (जैसे वेध, विपरित वेध आदि)।
10. क. शनि महादशा के सामान्य फल बताएं?
ख. गोचर बृहस्पति के सामान्य फलों पर चर्चा करें।

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजी०) चेन्नई

ज्योतिष प्रवीण परीक्षा : जून-2010

प्रश्न पत्र-IV

समय : 3 घण्टे

कुल अंक : 50

कोई भी पाँच प्रश्न हल करें। प्रश्न 1 तथा 6 अनिवार्य हैं। दोनों भागों में से कम से कम एक-एक प्रश्न का चयन करते हुए तीन अन्य प्रश्नों के उत्तर दें। सब प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-I (ताजिक शास्त्र)

- वर्ष 2010-11 के फलादेश के लिए सोमवार 11.5.1964 को प्रातः 8.50 पर फरीदाबाद (हरियाणा) में जन्मे जातक के लिए वर्ष कुण्डली बनाएं।
- निम्न वर्ष कुण्डली के आधार पर उत्तर दें :-
 लग्न - मिथुन 1:11, सूर्य - कर्क 18:59, चन्द्र - वृषभ 16:54
 मंगल - कन्या 9:57, बुध - सिंह 16:16, गुरु (व) - मीन 9:06
 शुक्र - कन्या 4:17, शनि - कन्या 7:17, राहु - धनु 17:35
 क. सभी ग्रहों के हर्ष बल की गणना करें।
 ख. सभी ग्रहों के उच्च बल की गणना करें।

अथवा

उपरोक्त वर्ष कुण्डली 4.8.1961 में जन्मे जातक के लिए 49 वे वर्ष की है व लग्नका जन्म लग्न मुला है। इस जातक के लिए मुन्था की गणना करें व मुन्था के विभिन्न भागों के फल बताएं।

- प्र. 2 में दी वर्ष कुण्डली के ग्रहों का पंचवर्षीय बल दिया गया है। उनके आधार पर वर्षेश का निर्धारण करें।
 सूर्य - 11:94, चन्द्र - 15:86, मंगल - 8:04, बुध - 11:70, गुरु - 11:47
 शुक्र - 8:44, शनि - 10:69
- पुण्य, दश, कार्यसिद्धि व लाभ सहम की गणना के समीकरण लिखें व प्र. 2 के लिए उनकी गणना करें।
- निम्न का उत्तर दें :-
 क. द्विजन्म वर्ष ख. मुद्दा दशा ग. पत्न्यायिनी दशा

भाग-II (मुहूर्त)

- विवाह का मुहूर्त तय करने में किन तथ्यों का ध्यान रखते हैं?
- निम्न का उत्तर दें :
 क. मुहूर्त कुण्डली में लग्न क्या महत्व है?
 ख. भद्रा के बारे में आप क्या जानते हैं?
- कुजा दोष क्या है? क्या इसे विवाह मेलापक में देखना आवश्यक है? चर्चा करें।

अथवा

निम्न पर संक्षिप्त में लिखें :

- क. अभिजित मुहूर्त ख. कुम्भ चक्र शुद्धि ग. भद्रा करण घ. गोधुलि लग्न
- निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें :-
 क. पचास शुद्धि ख. ध्रुव नक्षत्र ग. तारा बल घ. चन्द्रबल ङ सूर्य सकात
- निम्न मुहूर्त निर्धारण में किन नियमों का पालन किया जाता है :-
 क. उपनयन मुहूर्त ख. विधारम्भ मुहूर्त